Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

पुराणों में पर्यावरण – संरक्षण

डॉ. गुंजन गर्ग

सहायक आचार्य संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी राजस्थान

सारांशः–
पुराण भारतीय ज्ञान–विज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। यहाँ सर्वत्र सृष्टि प्रक्रिया, द्वीपादि का भौगोलिक वर्णन, तीर्थ माहात्म्य, यज्ञ महिमा, वृक्षपूजा, सूर्य माहात्म्य, गो महिमा आदि वर्णन प्राप्त होते हैं। यहाँ मानव को विविध माध्यमों से पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा दी गई है। पशु–पक्षियों के प्रति दयाभाव, वन्य जीवों को परिवार का सदस्य मानना, वृक्षों की पूजा और उनका रूपण, जलाशय–नदियों का संरक्षण आदि विविध विषयों का वर्णन प्राप्त होता है। इस प्रकार यहाँ मानव प्रकृति की गोद में अपना सम्पूर्ण विकास करता है। पुराणों में पर्यावरण संरक्षण का वर्णन ही इस शोध पत्र का प्रतिपाद्य विषय है।

मुख्य बिन्दुः– पुराण, शिव पुराण, निरूक्त, अग्निपुराण, मत्स्य पुराण, भविष्य पुराण, पद्मपुराण, वराहपुराण, वायुपुराण, पर्यावरण आदि।

पुराण भारत की धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और और राजनैतिक विचारधारा के अक्षय भण्डार हैं। पुराण वस्तुतः अतीत को वर्तमान से जोडने वाली कनकमयी श्रृंखला हैं। निरुक्तकार यास्क का कथन है– पुराणं कस्मात् ? पुरा नवं भवति[1प] । अर्थात् जो प्राचीनकाल में नवीन था। यास्क के इस कथन से यह अर्थ भी ध्वनित होता है कि जो साहित्य एक ओर पुरातनी सृष्टि विद्या वेदविद्या से अपना सम्बन्ध बनाये रखता है[2] और दूसरी ओर नित्य नये–नये रूप में उत्पन्न लोक– जीवन से अपना सम्बन्ध जोडे रखता है, वही पुराण है। इसीलिए इनकी विषयवस्तु प्राचीनवत् अद्यतन भी उतनी ही प्रासंगिक और उपादेय है।

प्रकृति और मानव का सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भ से रहा है। वेद की ऋचाओं का जन्म ऋषि के कण्ठ से प्रकृति की गोद में ही हुआ है। जैसा कि यजुर्वेद में कहा है–
उपह्वरे गिरीणां व संगमे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत ।[3]
हमारे वैदिक देवता भी पृथ्वी, अग्नि, वरुण, सविता, ऊषा आदि थे, जो पर्यावरण के अंग हैं। वृक्षपूजा, पशुओं के प्रति दयाभाव, नदीं आदि जल स्रोतों की रक्षा आदि का वर्णन वेदों में, पुराणों में सर्वत्र प्राप्त होता है, जो पर्यावरण संरक्षण को ही इंगित करता है। भारतीय तीज त्यौहार भी पर्यावरण से जुड़े हुए हैं। पुराणों में सर्वत्र सृष्टि प्रक्रिया, द्वीपादि का भौगोलिक वर्णन, तीर्थ माहात्म्य, यज्ञ महिमा, वृक्षपूजा, सूर्य माहात्म्य, गो महिमा आदि वर्णन प्राप्त होते हैं, जो हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करते हैं। जिसे इस प्रकार देख सकते हैं–

(i) शिवपुराण में पर्यावरण संरक्षण :

शिव पुराण नैमिषारण्य में उपस्थित व्यास एवं अन्यान्य गुरुवर्य ऋषियों को सनत्कार के मुखारविन्द से श्रवण करवाया गया है। इस पुराण में इतिहास के साथ–साथ पर्यावरणीय विविध आख्यानों का समावेश किया गया है।

(i). यज्ञ हवनादि में औषधयुक्त आहुतियां दी जाती थी, जो वातावरण में व्याप्त संक्रमण को नष्ट कर पर्यावरण शोधन का कार्य करती हैं। यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली औषधियों को युक्तिपूर्ण, विनयसहित, भावानुसार ग्रहण किया जाता था। किसी वृक्ष से पुष्प, फल, पत्र, मूलादि प्राप्त करने के लिए उसकी पूजा अर्चना की जाती थी। यज्ञ से निःसृत धूम पर्यावरण शोधक तथा रोगों का नाश करता है। यज्ञ से निःसूत प्राणवर्षा की शक्ति में परमाणु विस्फोटों से विषाक्त परिवेश को परिशोधन करने की विलक्षण क्षमता है। इस शुद्धिकरण के बाद वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती थी, जिससे

वनस्पति, धान्य और वृक्षादि से वसुन्धरा सम्पन्न होती थी। इस प्रकार यज्ञ धार्मिक कृत्य के साथ पर्यावरण शुद्धि का सर्वोत्कृष्ट माध्यम है।

(ii). शिव पशुपति, पशुओं के देवता माने जाते हैं। उन्होंने पशुओं, पक्षियों और वन्य जीवों को परिवार का सदस्य बनाने का उपक्रम किया है।

(iii). शिवपुराण में पृथ्वी की शुद्धि, मण्डप निर्माण कार्य, कथाश्रवण के लिए नैसर्गिक परिवेश, विल्ब वनादि का वर्णन प्राप्त होता है, जैसा कि उद्धरण है–

कार्य संशोधनं भूमेर्लेपनं धातुमण्डनम्।
विचित्रा रचना दिव्या महोत्सवपुरःसरम् ।।
कर्तव्यो मण्डपोऽत्युच्चैः कदली स्तम्भमण्डितः ।
फलपुष्पादिभिः सम्यग् विष्वग्वैतानराजितः ।।[4]

पृथ्वी की शुद्धि से पर्यावरण स्वच्छ होता है। गाय के गोबर में कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है। इसके लीपने से संक्रमण का भय नहीं होता। कदली स्तम्भ, फल, फूल, पत्तियों से सज्जित मण्डप वृक्षारोपण, वनस्पति संरक्षण की भावना जागृत करता है।

(iv). शिव के विवाह प्रसंग में नदियों के शुभागमन और उनके अतिथि सत्कार का चारुतापूर्ण वर्णन प्रकृति प्रेम में उद्भासित करता है–

तदा सर्वे समायाताः शोषणभद्रादयः खलु ।
बहुशोभा महाप्रीत्या विवाहः शिवयोरिति ।।
नद्यः सर्वाः समायाताः नानालङ्कारसुंयताः।
दिव्यरूपधराः प्रीत्या विवाहः शिवयोरिति 11[5]

(V) माता के रूप में, नारी शक्ति के रूप में गिरिजा पार्वती प्रकृति है और आशुतोष शंकर नर के रूप में पुरुष है। प्रकृति सबकी उत्पत्ति व संहार करती है।

सा शक्तिः प्रकृतिर्जेया सर्वेषामपि कर्मणाम।
तथा विरच्यते सर्वं पाल्यते च विनाश्यते।।[6]

भारत तपोभूमि है। यहाँ पर्वतों को श्री से अलंकृत किया गया है। सिद्ध–क्षेत्र में अक्षयवट, विविध प्रकार की वनस्पतियाँ, वृक्षावलियां यहाँ की शोभा को बढ़ाते हैं। नदियां प्रवाहित होकर हमारे देश के भूभाग को शस्य श्यामला बनाती हैं। हिमालय भी हमें संरक्षा देकर हमारा उपकार करता है। सब ओर वनों का विस्तार है। पशु, पक्षी, कृमि, कीट, मृग आदि सभी पर्यावरण सन्तुलन के अभिलाषी हैं। अतः सूर्य, जल, अग्नि, वायु, आकाश को शिव का स्वरूप समझकर वायुमण्डल को प्रदूषण से मुक्त रखना चाहिए।

अग्नि पुराण में पर्यावरण संरक्षण :–

यहाँ सूत जी ने जगत् की सृष्टि आदि करने वाले भगवान विष्णु को सबसे बढ़कर सार वस्तु माना है। –

सारात्सारो हि भगवान् विष्णुः सर्गादिकृद्विभुः।
ब्रह्माहमस्मि तं ज्ञात्वा सर्वज्ञत्वं प्रजायत ।।[7]

समग्र विश्व में सात्त्विक पोषणकारी ऊर्जा का प्रवाह है। पृथ्वी, जल, पवन, सूर्य, आकाश सभी प्राणियों के शुभचिन्तक हैं। अतः पर्यावरण सन्तुलन के प्रति समर्पित रहना चाहिए। यहाँ निम्न उद्धरणों में पर्यावरण संरक्षण को देख सकते हैं –

(i) अग्नि पुराण के हरिवंश पुराण में बारहवें अध्याय में गोपाल संवर्धन को पर्यावरण लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध किया है–

रक्षणाय च कंसादेर्भीतेनैव हि गोकुले ।
रामकृष्णौ चेरतुस्तौ गोभिर्गोपालकैः सह।
सर्वस्वं जगतः पालौ गोपालौ तौ बभूवतुः।
कृष्णश्चोलूखलो बद्धो दाम्ना व्यग्रयशोदया ।।

(ii) श्रीकृष्ण और बलराम ने गोकुल में गायें चराकर गौमाता के संरक्षण और अभिवर्धन की प्रेरणा दी–
गविप्रपालनं कार्यं राज्ञा गोशान्तिमावदे।
गावः पवित्रा माङ्गल्याः गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः।।[8]
आज सिन्थेटिक दूध का प्रयोग और गो माता की दयनीय स्थिति चिन्तनीय है।

(iii) अग्निपुराण में वृक्षायुर्वेद में श्री धन्वन्तरि ने वृक्षों की स्थिति और वृक्षारोपण का उपदेश दिया है–

वृक्षायुर्वेदमाख्यास्ये प्लक्षश्चोत्तरतः शुभः।
प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्र आप्येऽश्वत्थः क्रमेण तु ।।[9]

यहाँ वृक्षारोपण का विस्तृत वर्णन है। वृक्षों की देखभाल कैसे करनी चाहिए? कौनसा वृक्ष किस प्रकार शुभ, अनिष्ट निवारण करता है। सबका विस्तृत वर्णन यहाँ किया गया है। यह षडङ्गान्यहोरास्त्राणि नामक 323 वें अध्याय में प्रणवाक्षर तथा माया के जप से अन्तरिक्षजन्य तथा भूमिजन्य वृक्षावलियों की शान्ति के विषय में दिग्दर्शन मिलता है।[10] अग्निपुराण में वन्यजीवों पर पर्याप्त चर्चा की गई है।[11] यहाँ 289 वां अध्याय अश्व चिकित्सा पर ही है। अध्याय 291 में हाथीपूजा पर भी चर्चा की है–
गजाः शान्त्युदकासिक्ता वृद्धो नैमित्तिकं श्रृणु।
गजादों मकरादौ च ऐशान्यां नगराद् बहिः ।।[12]
(iv) यहाँ जलाशय, देवालय, नदीतट को योगसाधना के लिए उपयुक्त माना है–
आसीनस्तु जपेन मंत्रान् देवताचार्यतुल्यदृक्।
कुटि विविक्तदेशाः स्युर्देवालय नदीह्रदाः ।।[13]

(v) संगीत की मधुर लहरियों से मन की चिकित्सा होती है। सामवेद की संगीत साधना इसका आधार है।[14]

(vi) प्रकृति के हर घटक में मानव की आवश्यकता पूर्ति के लिए ऊर्जा विद्यमान रहती है। ऊर्जा के दोहन से प्राकृतिक घटकों में असंतुलन उत्पन्न होता है, जिससे प्रदूषण फैलता है।

मत्स्य पुराण में पर्यावरण संरक्षण :–
भगवान विष्णु के मत्स्यावतार विषयक मत्स्य पुराण अष्टादश पुराणों में विशिष्ट ज्ञान राशि के भण्डार और पर्यावरणीय चेतना, सांस्कृतिक वैभव को अक्षुण्य बनाए रखने में सहायक है।
(i) प्राचीन समय में सूर्यपुत्र महाराजा सत्यव्रत राजा मनु ने मलयाचल में गहन तप के अनुष्ठान के अनन्तर ब्रह्माजी से प्रेरित होकर प्रलय के बाद स्थावर जङ्गम जीव समूह की रक्षा का वरदान प्राप्त कर आश्वस्त हुए। उनकी मंगल कामना और पर्यावरणीय के प्रति अनन्य समर्पित भावों को मत्स्य पुराण में इस प्रकार रेखांकित किया है–
एवमुक्तोऽब्रवीत् राजा प्रणम्य स पितामहम् ...
पुष्पवृष्टिः सुमहती ख्यात पपात सुरार्पिता ।[15]
वैवस्वत मनु ने अपने स्वार्थी को त्यागकरके स्थावर जङ्गम और समग्र जीव समूहों की रक्षा के लिए अपना मन्तव्य प्रकट किया।

(ii) पुराण में वृक्षजन्य उत्पात के लक्षण और उनकी शान्ति के विषय में कहा है–
परेषु येषु दृश्यन्ते पादपाः देवचोदिताः ।
रुदन्तो वा हसन्तो वा स्रवन्तो वा रसान् बहून् ।।[16]
वृक्षों के रुदन करने पर व्याधियां मिलती और फैलती हैं–
रोदने व्याधिमभ्येति ।[17]

(iii)यहाँ ऐरावती नदी के प्राकृतिक सौन्दर्य का सूत जी ने सुन्दर चित्रण किया है–
तुहिनगिरिभवां.... परां ययौ ।[18]

यहाँ हिमालय क्षेत्र में एक सरोवर भूमि का वर्णन किया है, जिसमें कौडी, सीपी मरकतमणि आदि विद्यमान थे, जो जल को किसी प्रकार प्रदूषित नहीं करते। यहाँ शाकद्वीप, कुशद्वीप, क्रौञ्चद्वीप और शाल्मल द्वीप के वर्णन में सभी नदियों को पुण्यतोया कहा है। सात द्वीपों के चित्रण में जल की सम्यक् वृद्धि और जलराशि को समुद्र के रूप में परिभाषित करने के सन्दर्भ में कहा है–
एवं द्वीपं समुद्राणां वृद्धिर्ज्ञेया परस्परम्।
अपां चैव समुद्रकात् समुद्र इति संज्ञितः ।।[20]

(iv) यहाँ अत्रि आश्रम के पुण्यमय परिवेश का सुन्दर चित्रण हुआ है। जिसमें हिंसक प्राणी भी अपना स्वभाव त्यागकर अहिंसक बन गए। मांसभोगी जीव भी दूध फलों का आहार करते हैं–
तत्प्रासाद प्रभायुक्तं स्थावरैर्जङ्गमैस्तथा।
हिंसन्ति हि न चान्योन्यं हिंसकास्तु परस्परम् ।।
क्रव्यादा : प्राणिनस्तत्र सर्वे क्षीरफलाशनाः ।
निर्मितास्तत्र प्राणिनस्तत्र सर्वे क्षीरफलाशना : ।।[21]
इस प्रकार यहाँ सृष्टि सृजन के प्रति दयाभाव, वन्यजीव संरक्षण, नदी, सरोवर, द्वीपवर्णन पर्यावरण चेतना के प्रतीक हैं। यहाँ जल, सूर्यादि की उत्पत्ति का वर्णन भी किया गया है। यहाँ तपस्वी सहिष्णुता के अनुयायी और पर्यावरण संतुलन के प्रति सचेत रहने वाले हैं।

भविष्य पुराण में पर्यावरण संरक्षण :–
भविष्य पुराण में सृष्टि सृजन और जीवों के कर्म का चित्रण किया गया है। यहाँ वनस्पति तथा उसके भेदों का वर्णन किया है–

(i) यहाँ भगवान सूर्य नारायण के सौम्य स्वरूप की स्तुति की गई है तथा संसार के नेत्रस्वरूप प्रत्यक्ष देवता के रूप में स्तुति करते हुए कहा है–
प्रत्यक्षं देवता सूर्यो जगच्चक्षुर्दिवाकरः।
तस्मादभ्यधिका काचिद्देवता नास्ति शाश्वती ।।[22]
आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी पूरा विश्व ऊष्मा से बना हुआ है।

(ii) यहाँ धात्री वसुन्धरा के गौरव का वर्णन किया है–
नमस्ते सर्वदेवानां त्वमेव भवनं यतः।
धात्री त्वमसि भूतानामतः पाहि वसुन्धरे ।।[23]

भूमि के बिना किसी भी जीव की कल्पना नहीं की जा सकती।

(iii) उत्तरपर्व के अन्तर्गत जलचर जीवों के स्वामी वरुणदेव को नमस्कार करते हुए अनुग्रह की कामना निम्न प्रकार से की है–
वरुणाय नमस्तुभ्यं नमस्ते यादसाम्वते ।
अपाम्पतेः नमस्तेऽस्तु रसानाम्पतये नमः ।।
मा क्लेदं मा च दौर्गन्ध्यमं विरस्यं मुखेऽस्तु मे।
वरूणों वरुणो वारुणीभर्ता वरदोऽस्तु सदा मम ।।[24]

वरूण जल के देवता हैं। जल से ही सभी जीवों का अस्तित्व है।

(iv) उत्तरपर्व में महाभूतों की पूजा का निर्देश है।[25] ये सभी सृष्टि के घटक देवशक्ति के प्रतीक हैं। इसके संतुलन पर पर्यावरण टिका हुआ है।

(v) यहाँ अन्न को ब्रह्म समझकर सम्मान दिया है। उसी में प्राणियों के प्राण समाहित हैं। इसीलिए अन्न के प्रति श्रद्धा रखते हुए अन्न को गोबर आदि खाद के प्रयोग से उपजाया जाना चाहिए।

इस प्रकार हमें प्रकृतिं शरणं गच्छामि' के मूलमंत्र को अपनाकर प्रकृति की संरक्षा करनी चाहिए।

(Vi) अग्निदेव उन जीवाणुओं का नाश करता है, जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक हैं। प्रकाश के रूप में यह हमारे आसपास के वातावरण को शुद्ध करता है। दूषित जल को भी उबालने से वह कीटाणुरहित हो जाता है। इस प्रकार अग्नि पर्यावरण के अनुकूल हो तो पर्यावरण में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

अन्यान्य पुराणों में पर्यावरण संरक्षण –

पद्मपुराण के आदिखण्ड में पृथिवी दक्षिणा का फल[27], नर्मदा[28]– कालिन्दी[29]– वाराणसी[30], प्रयाग तीर्थ माहात्म्य[31], ब्रह्मकाण्ड में तुलसी पत्र पूजन[32], पातालखण्ड में वृन्दावनमहात्म्य[33], सृष्टि खण्ड में जलदानप्रशंसा, निर्जल प्रदेश में सरोवर खुदवाने, वृक्ष लगाने आदि[34] वर्णन पर्यावरण संरक्षण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हैं।
वायुपुराण में विश्व के तथा भारत के भूगोल, खगोल का वर्णन है।[35]

लिंगपुराण में स्थूल सृष्टि प्रसंग में द्वीप पर्वतादि का सीमा सहित वर्णन, पृथ्वी के अधोवर्ती लोकों का वर्णन प्राप्त होता है।[36]
स्कन्दपुराण में महाशिवरात्रि माहात्म्य[37] ब्रह्मवैवर्त पुराण में तुलसी माहात्म्य, गंगा महिमा[38] मार्कण्डेय पुराण में आधिदैविक, आध्यात्मिक, आधिभौतिक व्याधियों का निवारक सूर्य को माना है।[39] वामनपुराण में पियाऊ, मन्दिर, बगीचा ब्राहमण का घर सभी स्थल बावली, रूप, सरोवरों को नष्ट न करने को कहा है।" वराहपुराण में तीर्थमहत्त्व, वृक्षारोपण का विशेष वर्णन है। वृक्षारोपण के विषय में कहा है–
भूमिदानेन ये लोका गोदानेन च कीर्तिताः ।
ते लोकाः प्राप्यन्ते पुभिः पादपानां प्ररोहणे।।[41]

कूर्मपुराण में बाह्याभ्यन्तर दोनों प्रकार के पर्यावरण संरक्षण की बात संकलित है। सदाचार वर्णन के प्रसंग में जहाँ उच्च नैतिक मूल्यों पर जोर दिया है। वहीं अग्नि, जल, वायु आदि की शुद्धि, वृक्ष, पशु–पक्षी आदि के संरक्षण पर बल दिया है। ब्रह्माण्ड पुराण में भूगोल, खगोल वर्णन सप्तद्वीप, पर्वत, नदी, वनस्पतियों के वर्णन से ओतप्रोत है।[43]
इस प्रकार, निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि लगभग समस्त पुराणों में सृष्टि वर्णन, नदी, तीर्थ, वृक्षादि की महिमा, पंचमहाभूतों के प्रति आदर, वन्यजीव रक्षण, गो पूजा आदि पर विस्तृत चर्चा हुई है। ये सभी प्रकृति के घटक, पर्यावरण के अंग हैं।

संदर्भ -

1. निरुक्त, तृतीय अध्याय, पृ. 154,
2. नारदीय पुराण 1.9.100 – सर्ववेदार्थसाराणि पुराणानीति भूयते ।
3. यजुर्वेद 26/15
4. शिव पुराण 6.20,21
5. तत्रैव 38.41,42
6. शिवपुराण – 13.3
7. अग्नि पुराण– 1.4.1
8. तत्रैव– 2.92.1
9. अग्निपुराण 2.82.1
10. तत्रैव – 323.1
11. तत्रैव 2.30–12–16
12. तत्रैव 291.5
13. संस्कृत वाङ्मय में व्याकरण, पृ. 22.3
14. तत्रैव पृ. 227

15. मत्स्य पुराण – 1.15–17
16 तत्रैव– 235.1
17 तत्रैव 235.5
16. तत्रैव–116.1–4
19. तत्रैव– 122.36–40
20 तत्रैव 123.28
2.1. मत्स्यपुराण–119.63–64
22. भक्तिपुराण 48.21
23. तत्रैव–उप., 165.23
24. तत्रैव उ.प., 91.7–8
25. भविष्य पुराण, उ. प. – 183.10–11
26. तत्रैव – 195.43–44
27. पद्म पुराण, अ. 1–12
28. तत्रैव, अ. 13–21
29. तत्रैव अ. 29–32
30. तत्रैव, अ. 33–39
31. तत्रैव अ. 40–49
32 पद्मपुराण, ब्रह्मकाण्ड, अ. 3–5
33. तत्रैव, अ. 69–83
34. तत्रैव, सृष्टिर 905, अ. 54–60
35. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास, 13वां खण्ड, पृ. 133
36. तत्रैव, पृ–143
37. तत्रैवः पृ. 284
38. तत्रैव. पृ 392–93
39. तत्रैव. पृ. 409
40. तत्रैव. पृ 431
41. वराहपुराण – 172/36
42 संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास, 13वां खण्ड, पृ. 506
43. तत्रैव पृ. 523